ॐ

यदि वास्तविक देखा जाय तो यही विदित होता है कि जब तक आत्मा परमात्माके साथ एक न हो जाय अर्थात् जबतक उसकी इच्छाके अधीन न हो जाय तबतक जीवन में कोई भी आनन्द नहीं । और अपनी वासना स्थूल हो वा सूक्ष्म किंचित् भी नहीं रहनी चाहिये । केवल परमात्मा की इच्छा को परम इच्छा समझकर उसको पालन करना और अपने मिथ्या अहंका उसमें विस्मरण करना ही अन्तिम पद वा मनुष्य-जीवनका मुख्य उद्देश्य है । भगवत्को छोड़ किसी वस्तुका आश्रय न लेना किन्तु तन मन प्राण और आत्माको भगवत्से उत्पन्न हुए जान और उसीके आधार समझ उसीमें लीन कर देना ही जीवनका लक्ष्य है । कोई कर्म करे वह भगवत् अर्पण हो ऐसे भक्ति योग द्वारा व्यवहार और परमार्थमें कुछ अन्तर नहीं रहता । वह जीवन-मुक्त हो जाता है ।